

शिक्षा संवाद

2023, 10(2): 145

ISSN: 2348-5558

©2023, संपादक, शिक्षा संवाद, नई दिल्ली

कविता

मैं जीवन में कुछ कर न सका

हरिवंशराय बच्चन

मैं जीवन में कुछ कर न सका!

जग में अँधियारा छाया था,
मैं ज्वाला लेकर आया था,

मैंने जलकर दी आयु बिता, पर जगती का तम हर न सका!
मैं जीवन में कुछ कर न सका!

अपनी ही आग बुझा लेता,
तो जी को धैर्य बँधा देता,

मधु का सागर लहराता था, लघु प्याला भी मैं भर न सका!
मैं जीवन में कुछ कर न सका!

बीता अवसर क्या आएगा,
मन जीवन भर पछताएगा,

मरना तो होगा ही मुझको जब मरना था तब मर न सका!
मैं जीवन में कुछ कर न सका!

स्रोत : पुस्तक : बच्चन के लोकप्रिय गीत (पृष्ठ 38) रचनाकार : हरिवंशराय बच्चन प्रकाशन :
हिंद पॉकेट बुक्स संस्करण : 2004